''जैन साहित्य में राजा और उनकी राजनीति''

प्रो0 (डॉ0) विश्वनाथ चौधरी

जैन साहित्य में साहित्कारों ने अपनी कृतियों में न्याय, ज्योतिष, गणित, भौतिक आदि विविध विज्ञान, प्राणीशास्त्र, भूगोल, सम्पति आदि विषयों का सरस, सुबोध और विस्तृत विवेचन किया है। साथ ही उन्होंने राजनीति का भी कोई ऐसा अंग नहीं है जिसे गहराई से स्पर्श न किया हो, ऐसा प्रतीत होता है कि जैसे राजनीति के प्रासाद का एक–एक कोना जैन रचनाकार झाँककर आये हों। इस प्रकार जैन कवियों, साहित्यकारों ने भारत की तत्कालीन राजा और राजनीति का सुव्यवस्थित सचित्र मर्मस्पर्शी चित्रण किया है।

भारतीय वाङगमय में जैन साहित्य का विशेष योगदान है। जैन साहित्य से भारतीय वाङगमय काफी सुदृढ हुआ है। इसलिए सम्पूर्ण भारतीय वाङगमय में जैन साहित्य का महत्त्वपूर्ण स्थान है।